63

भोजन की थाली से

शिक्षा के विविध उद्देश्यों में से एक यह भी है कि शिक्षा हमारे संवैधानिक उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन बनेगी और बच्चों में तार्किकता लाएगी। शिक्षा के ज़रिए यह तब सम्भव है जब हमारी पुस्तकें इस सोच को ध्यान में रखते हुए बनाई जाएँ और पुस्तकों को बच्चों तक ले जाने वाले शिक्षक इसके वाहक बनें। इसके लिए ज़रूरी है कि इन मूल्यों पर शिक्षकों और हमारे पाठ्यक्रम निर्माताओं की आस्था हो। ज़मीनी हकीकत इसके विपरीत ही दिखाई पड़ती है। बिना किसी तर्क के एक खास वर्ग की भोजन शैली को सही ठहराने और उसका वर्चस्व स्थापित करने की कोशिश हावी है जिसके चलते एक दूसरा वर्ग खुद को सवालों के घेरे में पाता है। क्या ऐसे सम्भव है समावेशी शिक्षा?

नारीवाद और विज्ञान

विज्ञान के बड़े शिक्षण संस्थान हों या शोध संस्थान, वहाँ महिलाओं की मौजूदगी बहुत कमतर है। क्या ऐसा इसलिए है कि वे योग्य नहीं? वास्तव में ये संस्थान जेंडर-पूर्वाग्रहों से मुक्त नहीं हैं। समस्या वहाँ के पुरुषवादी सांस्कृतिक परिवेश में है। दरअसल, यह सिर्फ महिला या पुरुष होने से कहीं आगे पुरुषवादीकरण है जो उस पूरे वातावरण और सोच में फैला हुआ है। यहाँ तक कि हमारा पाठ्यक्रम भी इससे अछूता नहीं। हम अपने विज्ञान शिक्षण में जो पढ़ाते हैं वह तो बस अन्तिम नतीजा ही होता है। वैज्ञानिक खोजें किन ऐतिहासिक परिस्थितियों में हुईं इसके बारे में बात करने की परवाह हम कभी भी नहीं करते। कुछ जगहों पर परिदृश्य बदला है। इतिहास, दर्शन या समाज शास्त्र और नारीवाद को विज्ञान से जोड़कर देखने की कोशिशें शुरू हुई हैं। इससे लोगों की सोच पर कुछ प्रभाव तो पड़ता ही है।

70

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-37 (मूल अंक-94), सितम्बर-अक्टूबर 2014

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

7 | **रदरफोर्ड मॉडल मुसीबत में - भाग 4**
सुशील जोशी

12 | **जेम्स बॉण्ड की दौड़ और स्नेल्स लॉ**
विवेक मेहता

25 | **मिथ्याकरण, क्रान्तियाँ और... - भाग 2**
रॉबिन डनबार

41 | **क्या समझ से पढ़ना बच्चों को... - भाग 2**
कीर्ति जयराम

54 | **सर! आपने तो अपना परिचय दिया ही नहीं**
केवलानन्द काण्डपाल

57 | **बोलचाल की भाषा और मुहावरे**
अनिल सिंह

63 | **भोजन की थाली से**
मोहम्मद उमर

70 | **नारीवाद और विज्ञान**
चयनिका शाह (साक्षात्कार - विवेक वेलांकी)

81 | **दुश्मन मेमना - भाग 2**
ओमा शर्मा

91 | **पूड़ी क्यों फूलती है?**
सवालीराम